Examene the Concept of Pareto's Logico experimental method or methedology of Sociology?

पैरेटो के तार्किक-प्रायोगिक पद्धति की अवधारणा का वर्णन करें? या समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति का वर्णन करें?

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक समस्याओं एवं घटनाओं के अध्ययन के लिए विभिन्न अध्ययन प्रणालियों का अविष्कार किया है। Vilfredo pareto ने भी सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए एक अध्ययन प्रणाली विकसित किया जो Logico - experimental method के नाम से जाना जाता है। ये विज्ञान के छात्र थे और इन्हे इंजीनियर के रूप में भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ था। किंतु Pareto इंजीनियर से एक अर्थशास्त्री और अन्ततः एक समाजशास्त्री बन गए। विज्ञान के छात्र होने के कारण घटनाओं की विवेचना करने का उनका ढंग गणित के सिद्धांतों एवं mechanics के नियमों पर आधारित था। इसलिए Pareto एवं अन्य विचारकों द्वारा विकसित चिंतन के सम्प्रदाय को समाजशास्त्र के क्षेत्र में mechanistic school के नाम से संबोधित किया जाता है।

प्रारंभिक काल से समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली की समस्या ने दार्शनिकों एवं सामाजिक वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट किया है और विभिन्न विचारकों ने समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली के सम्बन्ध में विभिन्न मत दिया है। प्रारंभिक काल के विचारकों के अनुसार समाजशास्त्र के अन्तर्गत प्रातीतिक (Subjective), अमूर्त तथा अभौतिक प्रकृति की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इन सब चीजों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना भी संभव न होगा। अतः प्रारंभिक काल के कुछ विचारकों ने यह विचार दिया कि समाजशास्त्रियें को दार्शनिक पद्धति के आधार पर समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए। दुसरी तरफ Durkheim, Comte, वेबर इत्यादि विचारकों ने समाजशास्त्र के क्षेत्र में विशुद्ध वैज्ञानिक एवं प्रायोगिक पद्धति का प्रयोग करने का विचार दिया। इस तरह स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली संबंध में Pareto से पहले विभिन्न विचारकों ने विभिन्न प्रकार का मत व्यक्त किया था। pareto ने उपर्युक्त दोनों प्रणालियों में से किसी को भी स्वीकार नहीं किया। इन्होंने यह महसूस किया कि सामाजिक समस्याएँ अतील, अमूर्त तथा कुछ हद तक प्रातीतिक प्रकृति की है। इसलिए सामाजिक घटनाओं के वर्णन में तार्किक आधार आवश्यक भावी है। किंतु इन्होंने यह भी कहा कि समाजशास्त्रियों को समाजशास्त्र को विज्ञान बनाने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन प्रणाली का प्रयोग करना भी आवश्यक है। इन्होंने विचार दिया कि समाज में बहुत सी ऐसी समस्याएँ है जो सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है और जो काल्पनिक तथा अवास्तविक है। Pareto के अनुसार इस तरह की समस्या का अध्ययन दर्शनशास्त्र में करना चाहिए और समाजशास्त्र में केव-

Scanned with CamScanner

न वस्तुनिष्ठ एवं मूर्त तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए।

Pareto ने समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली या वैज्ञानिक समाजशास्त्र की चर्चा करते हुए विचार दिया है कि समाजशास्त्र एक दर्शनशास्त्र नहीं है। इसी तरह इन्होंने बताया कि समाजशास्त्र एक विशुद्ध प्रायोगिक विज्ञान भी नहीं है। इसलिए समाजशास्त्र में ~~Logical~~ Logico experimental method का प्रयोग करना चाहिए। Pareto के अनुसार समाजशास्त्रीय अध्ययनवस्तु न तो पूर्णरूपेण दार्शनिक है और न ही सभी अध्ययन वस्तुएँ वस्तुनिष्ठ हैं इसलिए समाजशास्त्रियों को न तो केवल दार्शनिक पद्धति के आधार पर अपनी समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए और न ही केवल प्रायोगिक पद्धति के आधार पर समस्याएँ का अध्ययन करना चाहिए बल्कि तार्किक एवं प्रायोगिक दोनों पद्धतियों के आधार पर अपनी समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए।

Pareto के अनुसार तार्किक, प्रायोगिक पद्धति के तीन प्रमुख आधार हैं जो निम्न हैं:-

(क) निरीक्षण (Observation)
(ख) वस्तुनिष्ठ अनुभव (objective experience)
(ग) तार्किक निष्कर्ष (Logical conclusion)

Pareto के अनुसार वैज्ञानिक समाजशास्त्र को सामाजिक घटनाओं का अध्ययन अनुभव के आधार पर करना है एवं उन्हें वास्तविक निरीक्षण तथा प्रयोग की कसौटी पर कसना है। साथ ही विभिन्न घटनाओं में जो तत्व एक समान है उन्हें खोज निकालना है और अंत में उन समानताओं के आधार पर समाजशास्त्रीय नियमों का प्रतिपादन करना है। अतः यह स्पष्ट होता है कि Pareto ने न केवल निरीक्षण एवं प्रयोग के आधार पर अपनी समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए, बल्कि वस्तुनिष्ठ अध्ययन के आधार पर भी समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए। Pareto ने यह भी विचार दिया है कि जिन चीजों का अध्ययन तार्किक - प्रायोगिक पद्धति द्वारा संभव नहीं है उन चीजों को समाजशास्त्र के क्षेत्र में सम्मिलित नहीं करना चाहिए। Pareto के अनुसार समाजशास्त्री भावनाओं, संवेगों, आदर्शों तथा अनुभूतियों का अनुभव कर सकते हैं किंतु सामाजिक समस्याओं या घटनाओं के निरीक्षण और व्याख्या में उन भावनाओं एवं अनुभूतियों से अपने को पूर्ण तथा दूर रखना चाहिए। तार्किक प्रायोगिक पद्धति में व्यक्तिगत भावना आदेशों एवं अनुभूतियों का कोई स्थान नहीं है।

Pareto ने समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली या वैज्ञानिक समाजशास्त्र की अवधारणा में यह भी बताया है कि समाजशास्त्री एक समाज सुधारक या पैगम्बर नहीं है, बल्कि एक वैज्ञानिक है। इसलिए उसे वैज्ञानिक की तरह तथ्यों की खोज करना चाहिए तथा सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में नियमों का प्रतिपादन करना चाहिए। इन्होंने यह भी विचार दिया है कि जिस तरह एक वैज्ञानिक विभिन्न चीजों

Scanned with CamScanner

का अधिकार करता है किंतु उन अधिकारों के परिणामों की परवाह नहीं करता है, उसी तरह समाजशास्त्रियों को वास्तविकता की खोज करनी चाहिए, उसके परिणामों की चिंता नहीं करनी चाहिए। इन्होंने यह भी विचार दिया कि समाजशास्त्रियों को क्या है का अध्ययन करना चाहिए न कि क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए का अध्ययन करना चाहिए। Pareto ने यह भी विचार दिया है कि उनके पूर्ववर्ती समाजशास्त्रियों ने कुछ ऐसे सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है जो तार्किक प्रायोगिक पद्धति के अनुरूप नहीं है। यहां तक कि इन्होंने Comte & Spencer के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में भी दोष ढूंढ निकाला। इनके अनुसार समाजशास्त्र के क्षेत्र में कुछ ऐसे सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं जो वैज्ञानिक आधारों से दूर हैं ऐसे सिद्धांतों में सामाजिक उद्विकास, सामाजिक प्रगति, सांस्कृतिक विकास, मानवता का धर्म, प्रजातंत्र इत्यादि उल्लेखनीय है। इनसे सम्बन्धित सिद्धांतों में वैज्ञानिक विशेषताओं की कमी पायी गई है एवं तार्किक प्रायोगिक पद्धति के आधार पर इनका अध्ययन संभव नहीं है। अतः वैज्ञानिक समाजशास्त्र में इन सब समस्याओं का अध्ययन नहीं करना चाहिए। Pareto के अनुसार समाजशास्त्रियों को किसी भी पूर्वधारणा के आधार पर कार्य नहीं करना चाहिए। Pareto ने अपने प्रायोगिक पद्धति में या वैज्ञानिक समाजशास्त्र की अवधारणा में यह भी बताया है कि समाजशास्त्र नियम भी उतना ही यथार्थ और वास्तविक हो सकते हैं जितना प्राकृतिक और भौतिक विज्ञानों के नियम। किंतु इन्होंने यह भी विचार दिया कि समाजशास्त्रीय विषय भौतिक एवं प्राकृतिक विज्ञानों के विषयों की तरह सार्वभौमिक नहीं हो सकते बल्कि समाजशास्त्रीय नियम, समय और स्थान की सीमा में सहनित होते हैं। अर्थात् समाजशास्त्रीय तार्किक प्रायोगिक पद्धति के आधार पर समस्याओं का अध्ययन कर जो नियम प्रस्तुत करेगा वह एक निश्चित क्षेत्र में ही लागू होगा। इसका प्रमुख कारण यह है कि सामाजिक समस्याएँ या घटनाओं विभिन्न समाजों में एक जैसे नहीं होती है। दुसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न समाजों की परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती है। फलस्वरूप एक समाज का अध्ययन कर जो नियम प्रस्तुत किया जाएगा वह दुसरे समाज पर लागू नहीं होगा क्योंकी यह आवश्यक नहीं है कि दुसरे समाज की भी परिस्थितियाँ एक समान होगी। इन्होंने यह भी विचार दिया है कि परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण एक समस्या के सम्बन्ध में प्रतिपादित नियम विभिन्न समयों में लागू नहीं हो सकते हैं किंतु एक खास समाज में तथा एक खास समय में समाजशास्त्रीय नियम उतनी ही यर्थात और वास्तविक होगे, जितना कि भौतिक एवं प्राकृतिक विज्ञानों के नियम। इसका मतलब कि समाजशास्त्रीय नियम वास्तविक तथा यर्थात है, किंतु उसे अंतिम निष्कर्ष या नियम के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। समाजशास्त्रीय नियमों या निष्कर्ष में किसी भी समय परिवर्तन होने की संभावना रहती है Pareto ने अपनी तार्किक प्रायोगिक पद्धति की अवधारणा में बहुकारकीय विवेचना पर

A

बल दिया है। इन्होंने बताया है कि "All the factors are variables as well as functions." इसका मतलब कि सभी घटनाएँ अन्त: सम्बन्धित है और एक दुसरे को प्रभावित करती है अत: किसी एक घटना को अन्य सभी घटनाओं का कारक नहीं समझना चाहिए। Pareto ने Marx की आलोचना इसलिए किया क्योंकी Marx ने आर्थिक कारक को अंतिम रुप से निर्णायक कारक मानने की भूल की है। इन्होंने विचार दिया कि समाजशास्त्रियों को किसी एक घटना का अध्ययन करने के लिए अन्य सभी घटनाओं का अध्ययन करना चाहिए और कार्य-कारण सम्बन्धो की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। किंतु इन्होंने यह विचार दिया कि बारी-बारी से सभी घटनाओं का किसी एक घटना के उपर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना चाहिए और निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहिए। Pareto ने समाजशास्त्रियों को निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए यह सम्बन्ध सिद्धांत अथवा अंतर प्रकार्यात्मक सम्बन्ध के सिद्धांत को लागू करना चाहिए।

Pareto ने बहुत व्यवस्थित ढंग से समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रणाली एवं वैज्ञानिक समाजशास्त्र की अवधारणा प्रस्तुत करने का विचार दिया है किंतु इनके विचार कुछ रुपों में दोषपूर्ण है जो निम्नलिखित है:

आलोचना

(1) Pareto ने बहुत व्यवस्थित ढंग से तार्किक प्रायोगिक पद्धति की चर्चा किया किंतु इन्होंने स्वयं अपने समाज की मूर्त समस्याओं के अध्ययन में अपने अध्ययन प्रणाली को लागू नहीं किया।

(2) Pareto ने अपने तार्किक प्रायोगिक पद्धति के सिद्धांत में बताया कि समाजशास्त्रियों को वस्तुनिष्ठ समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए। किंतु उन्होंने स्वयं विशिष्ठ चालक तथा भ्रांत तर्क इत्यादि व्यक्तिनिष्ठ समस्याओं का अध्ययन किया। इसका मतलब कि Pareto ने समाजशास्त्रियों को जिन समस्याओं के अध्ययन से वंचित रहने का विचार दिया है उन समस्या के अध्ययन से वे स्वयं वंचित न रह सके। अत: यह कहा जा सकता है कि Pareto स्वयं अपनी अध्ययन पद्धतियों सिद्धांत पर दृढ़ न रह सके।

(3) Pareto ने कहा है कि समाजशास्त्रीय नियम भी उतना ही यथार्थ और वास्तविक है जितना प्रायोगिक एवं भौतिक विज्ञानों के नियम। जहाँ तक सामाजिक घटनाओं के अध्ययन का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए हमेशा प्रायोगिक पद्धति का प्रयोग करना संभव नहीं होगा। अत: समाजशास्त्रीय नियम कभी भी उतना अधिक यथार्थ नहीं हो सकते जितना भौतिक एवं प्राकृतिक विज्ञानो के नियम। (4) Pareto ने समाजशास्त्रियों को सामाजिक प्रगति सामाजिक पुनर्निर्माण आदि समस्याओं का अध्ययन करने से दूर रहने का विचार दिया। जो उचित नहीं है, क्योंकी उनका यह विचार सामाजिक विज्ञानों की उपयोगिता नष्ट कर देती है।

S. N. Choudhary
1/L.N.M.U

Scanned with CamScanner